International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 07-08-2024, Accepted: 06-09-2024, Published: 21-09-2024
Volume 10, Issue 3, 2024, Page No. 53-55

दारा शुकोहः संवादधर्मी, सामासिक संस्कृति का संरक्षक

डॉ. शगुन अग्रवाल
असोसिएट प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग, श्यामा प्रसाद मुखर्जी महिला महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
दारा शुकोह भारत के इतिहास का वो पात्र है जिसके संबंध में विचारकों तथा इतिहासकारों का मानना है कि यदि औरंगज़ेब के स्थान पर दारा ने मुगलिया सल्तनत की बागडोर संभाली होती तो शायद भारतीय समाज में वैसी धार्मिक संकीर्णता और कट्टरता न मिलती जैसी आज है। इस सोच के मूल में है दारा की संवादधर्मी, उदारवादी विचार–दृष्टि और उसके अनुरूप किए गए उसके कार्य। सत्ता के लिए संघर्ष छल–छद्म तथा मारकाट से भरे मध्यकालीन इतिहास में दारा एक ऐसा व्यक्तित्व है जिसके लिए इस्लाम तथा हिन्दू धर्म–दर्शनों का अध्ययन, तुलनात्मक–विश्लेषण तथा अनुवाद करना और भारत में संगम–संस्कृति का संरक्षण अधिक ज़रूरी था।

मूल शब्दः इतिहास, मुगलिया सल्तनत, संकीर्णता, कट्टरता, संवादधर्मी, उदारवादी, संघर्ष, तुलनात्मक–विश्लेषण, संगम–संस्कृति, संरक्षण

दारा शुकोह मुग़ल सम्राट शाहजहाँ का पुत्र और मुग़ल सम्राट औरंगज़ेब का भाई था। दारा शुकोह का जन्म ख़्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की भूमि अजमेर में हुआ था, जिनसे उनके पिता शाहजहाँ ने एक बेटे के लिए प्रार्थना की थी। यद्यपि उनके भाइयों को प्रशासक के रूप में सुदूर प्रांतों में प्रतिनियुक्त किया गया, किन्तु छह पुत्रों में सबसे बड़े और अपनी आँख के तारे को शाहजहाँ ने शाही दरबार में ही रखा। सुदूर के धूल–धूसरित प्रांतों और प्रशासन कार्यों से दूर रखे जाने के कारण दारा अपना समय आध्यात्मिक खोज में लगा सका। वह सूफ़ीवाद का प्रबल अनुयायी और सहिष्णुता का आदर्श था। दारा शुकोह ने अपने समय के श्रेष्ठ संस्कृत पंडितों, ज्ञानियों और सूफ़ी संतों की सत्संगति में वेदांत तथा इस्लाम के दर्शन का गहन अध्ययन किया साथ ही फ़ारसी एवं संस्कृत में इन दोनों दर्शनों की समान विचारधारा को लेकर विपुल साहित्य लिखा। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि यदि औरंगज़ेब के बजाय मुग़ल सिंहासन पर दारा शुकोह का राज होता तो धार्मिक संघर्ष में मारे गए हजारों लोगों की जान बच सकती थी। अपनी किताब "दारा शिकोह, द मैन हू वुड बी किंग" में अविक चंदा लिखते हैं – "दारा शिकोह का व्यक्तित्व बहुत बहुमुखी था। वह एक विचारक, विद्वान, सूफ़ी और कला की गहरी समझ रखने वाला शख़्स था।"[1]

दारा शुकोह एक त्रासदी का नायक है। उसके जीवन का आरंभ जश्न के साथ हुआ था, जीवन का मध्य भाग अत्यंत गौरवमय और शानदार था। शाहजहाँ ने उसे अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था, लेकिन उसके जीवन का अंत अत्यंत हृदय विदारक हुआ। उत्तराधिकार के लिए हुए युद्धों में दारा लगातार धोखाधड़ी और विश्वासघात का शिकार रहा। इसलिए उसकी पराजय हुई। 25 अगस्त 1659 को दारा और उसके बेटे सिपिहर शुकोह को मैले–कुचौले वस्त्र पहनाकर एक बूढ़े हाथी पर बैठाकर दिल्ली की सड़कों पर जुलूस निकाला गया। अपने प्रिय शाहजादे की ऐसी दशा देख दिल्लीवासी बहुत क्षुब्ध हुए। सार्वजनिक क्रोध और शोक की बातें सुनकर भयभीत और विचलित औरंगज़ेब को दरबारियों ने दारा की हत्या का सुझाव दिया और वहीं उलेमाओं ने दारा को विधर्मी बताते हुए उसकी हत्या का फ़तवा जारी किया। डॉ. रामविलास शर्मा ने सन् 1943 में श्दारा शिकोहश शीर्षक से एक लम्बी कविता लिखी जिसमें दारा के जीवन युद्ध और छल – छद्म से भरी पराजय और घृणास्पद हत्या का उल्लेख है किन्तु साथ ही इतिहास में दारा के अमर होने की घोषणा भी है –

"व्यर्थ है पुकार और व्यर्थ है यह कुहराम,
खुदा को पुकारना है व्यर्थ लेना राम – नाम,
घूमती है लाश अभी नगर में चारों ओर,
किंतु इतिहास में है दारा का अमर नाम।" [2]

रामविलास जी द्वारा की गई घोषणा की सत्यता के पीछे बहुत पुख़्ता कारण हैं। सबसे पहली वजह तो यही है कि वह भारतीय समाज में संवाद और सौहार्द्र की संस्कृति का विकास करना चाहता था जिसमें इस्लाम और हिन्दू धर्म – दर्शन की एकता हो। उसके विचार से इस्लाम और हिंदू धर्म दो समुद्रों की तरह हैं जिनके बीच संगम संभव है। इसके लिए उसने 1654–55 में दो किताबों की रचना की। पहली किताब फ़ारसी में है, जिसका नाम है "मज्म उल् बह्रैन" दारा ने दूसरी किताब संस्कृत में लिखी जिसका नाम है "समुद्र–संगम" । इस प्रकार दारा भारत की आध्यात्मिक परंपराओं हेतु इस्लाम के अनुकूलन के लिए एक महान साहित्यिक आंदोलन का हिस्सा बन गया । हालाँकि दारा शुकोह इस परंपरा का नवीनतम वाहक था, इस आंदोलन के मूल में कई मुस्लिम शासक थे जिन्होंने अतीत में हिंदू धर्म के प्रति मुस्लिम समझ को बढ़ाने के लिए विभिन्न संस्कृत कृतियों का फ़ारसी में अनुवाद करने का आदेश दिया था। इसका एक उदाहरण सम्राट अकबर का मकतबखाना (अनुवाद ब्यूरो) है, जिसने महाभारत , रामायण और योग वशिष्ठ के अनुवाद किए । दारा शुकोह ने हिंदू ग्रंथो का जो अनुवाद किया था वह इसी परंपरा का विकास था जो हिंदुओं तथा मुसलमानों के बीच परस्पर समझदारी और संवाद विकसित करने के उद्देश्य से किया गया था । इस संबंध में प्रोफ़ेसर जी. एन. ख़ाकी लिखते हैं –

"His contribution towards cultural legacy of Indian intellectual history is profound and amazing especially in the field of inter & religious dialogue - He was the icon of cultural pluralism- "[3]

दारा ने बनारस के पंडितों और संन्यासियों के सहयोग से मुसलमानों को हिंदू धर्म – दर्शन से परिचित कराने के लिए 52 उपनिषदों का 1657 ई. में फ़ारसी में "सिर्रे अकबर" (महान रहस्य) नाम से अनुवाद किया। दारा की मान्यता थी कि हिंदू एकेश्वरवाद की उपेक्षा नहीं करते अपितु वेद और उपनिषद एकेश्वरवाद के सागर के स्रोत हैं। वह उन्हें अद्वैत या तौहीद

का ग्रंथ मानता था । 'अस्तित्व की एकता' (वहदत–अल– वजूद) के सिद्धांतों की खोज हेतु ही उसने इस महान कार्य को अंजाम दिया और आगे चलकर इसी के लैटिन अनुवाद ने यूरोप तथा अमेरिका के दार्शनिकों का परिचय इस ज्ञान संपदा से कराया । श्री मद्भागवत गीता के फ़ारसी में अनुवाद का श्रेय भी दारा को है। एक अनुवादक के रूप में दारा का योगदान अप्रतिम तथा प्रशंसा के योग्य है।

दारा शुकोह ने सत्रहवीं सदी के मध्य में हिंदू तथा इस्लाम धर्म–दर्शनों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन की जो शुरुआत की, उसका आगे तो विकास हुआ ही लेकिन दारा से पूर्व भी इस दिशा में पर्याप्त कार्य हुआ है। दारा शुकोह के बहुत पहले से तीन धाराएँ ऐसी थीं जो आपसी समझ, साझेदारी और संवाद की संस्कृति के मूल में थीं । पहली धारा सूफ़ी मत की थी जो तेरहवीं –चौहदवीं शती से भारत में फैल रही थी और निज़ामुद्दीन औलिया के शिष्य, सूफ़ी शायर अमीर खुसरो का संबंध इससे था। मसनवी तुगलक़नामा में उन्होंने लिखा है:

"शुद अज़ मोमिन बगदू बांग–ए–तकबीर
ज़ि गब्र आवाज़ 'नारायन' हवा गीर"

अर्थात् यह वह समय था जब मुसलमानों की अज़ान की आवाज़ आसमान की ओर जा रही थी और हिंदुओं के मुँह से नारायण – नारायण का स्वर निकल रहा था।[4]

दूसरी धारा हिंदू के निरगुनिये संतों की थी जिन्होंने इस्लाम तथा हिंदू धर्म – दर्शन के ठेकेदार मुल्लाओं और पंडों की रूढ़िवादी मान्यताओं को सिरे से खारिज कर धर्म की भाषा को नए मायने दिए । इस धारा की अगुवाई कर रहे थे कबीर और दादू दयाल। एकेश्वरवाद के साधक कबीर काफ़िर शब्द की नितांत मौलिक व्याख्या करते हुए लिखते हैं –

"कबीर सोई पीर है जो जाने पर पीर,
जो पर पीर ना जानई सो काफ़िर बे पीर।"[5]

तीसरी धारा का आरंभ स्वयं दारा के परदादा बादशाह अकबर ने किया था जिनकी सांस्कृतिक तथा धार्मिक दृष्टि का दारा पर गहरा प्रभाव दृष्टिगत होता है । अकबर विभिन्न धर्मो के बीच विचार विमर्श के हिमायती थे। उनके दरबार के नवरत्नों में से एक रहीम थे जो निस्संदेह भारत की सांस्कृतिक, धार्मिक तथा भाषायी बहुलता के प्रतिनिधि कवि हैं मानस संबंधी उनके निम्नांकित दोहे से प्रयारू प्रत्येक मानस प्रेमी परिचित होगा–

"रामचरितमानस विमल, संतन जीवन प्रान।
हिंदुवन को वेद सम, तुरूकहिं प्रकट कुरान।।"[6]

वस्तुत: दारा की विचारधारा पहले से चली आ रही परंपरा का ही विकास था और दारा की निर्मम हत्या के बाद भी इस परंपरा का प्रभाव उर्दू शायरों के लेखन में अभिव्यक्त होता रहा। इस विचारधारा के शायर /कवि दरअसल जनसंस्कृति के कवि हैं जो जन भाषा में जन भावनाओं की कविता लिख रहे थे। अमीर खुसरो से शुरू हुई यह परंपरा नज़ीर अकबराबादी और ग़ालिब से होते हुए आज भी चल रही है रविंद्रनाथ ठाकुर की कविता है –

'हे मोर चित्त,पुण्य तीर्थे जागो रे धीरे।'[7]

और महात्मा गाँधी के प्रिय भजन–"ईश्वर अल्लाह तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान"। में भी इसी सोच की प्रतिध्वनि सुनाई देती है। हिंदी के कवियों और लेखकों ने भी अपनी कृतियों द्वारा इस परंपरा का पोषण किया है। भारतेंदु, प्रेमचंद, निराला, दुष्यंत कुमार आदि इसी श्रृंखला की कड़ियाँ हैं।

विद्वानों एवं विचारकों के बीच दारा के प्रति आकर्षण और सम्मान के दो अन्य कारण हैं उसका सूफ़ी साधक और हिन्दी तथा फ़ारसी का शायर होना । वह कादिरी संप्रदाय के प्रसिद्ध फ़कीर मियाँ मीर और मुल्लाशाह का शिष्य था और आगे चलकर कादिरी सिलसिले की उदारवादी विचारधारा का कायल हो गया । उसने सूफ़ी साधकों और सूफ़ी साधना को सर्वग्राह्य बनाने के लिए पाँच किताबें लिखीं जिनमें प्रसिद्ध सूफ़ी साधकों की जीवनियों और चमत्कारों का वर्णन है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि भारत में पूरे मुस्लिम शासन के दौरान दारा शुकोह जैसी लगन और भावावेश से आध्यात्मिकता के प्रति समर्पित कोई राजकुमार न था। कालिकारंजन कानूनगो अपनी पुस्तक में लिखते हैं–

"इसमें संदेह नहीं है कि दारा शिकोह अपने देश और काल का महत्तम विद्वान था और तैमूर वंश का सर्वोपरि विद्वान राजकुमार था। विद्या के क्षेत्र में वह नव – दीक्षित न था; किंतु ब्रह्मविद्या का वह उत्साही विद्यार्थी था। ईश्वर प्रेरित धर्मो में बहुत्व में एकत्व के सिद्धांत का अन्वेषण करने का उसको अनुराग था। उसकी साहित्यिक कार्यशीलता का इतिहास उसकी आध्यात्मिकता के विकास का भी इतिहास है ।"[8]

भारत के मुग़लिया शासकों का शायरी से गहरा रिश्ता था। बाबर से लेकर बहादुर शाह ज़फ़र तक सभी शायरी करते थे। कुछ फ़ारसी में कुछ हिंदी (ब्रजभाषा) में और कुछ दोनों में।[9] ऐसे राजवंश में पैदा होने के कारण दारा का शायरी करना स्वाभाविक था। शायर के रूप में दारा की प्रतिष्ठा उसकी फ़ारसी कविताओं पर निर्भर है क्योंकि ब्रजभाषा में लिखी कविताओं के संग्रह ' दोहास्त्व' का केवल उल्लेख मिलता है पांडुलिपि नहीं । दारा की फ़ारसी कविताओं के दीवान का नाम "इक्सिर–ए–आज़म" है । दारा की शायरी मुख्यतः दार्शनिक है और उसमें तौहीद की अभिव्यक्ति है।

वस्तुत: भारत जैसी सामासिक संस्कृति वाले देश को दारा जैसे संवादधर्मी, उदार और सृजनशील विचारक की आवश्यकता जितनी उस समय थी आज उससे कहीं ज्यादा है। सत्ता – संघर्ष के ब्यौरों से भरे मध्यकालीन इतिहास में दारा शुकोह अपवादस्वरूप था जिसे अपनी विचार–दृष्टि और उसके अनुरूप किए गए कार्यों की कीमत जान देकर चुकानी पड़ी । प्रख्यात आलोचक मैनेजर पाण्डेय जी ने ठीक ही लिखा है –

"आजकल भारतीय समाज में तरह–तरह की संकीर्णताओं और कट्टरताओं का प्रसार दिखाई दे रहा है। ऐसी स्थिति में दारा शुकोह की सूफ़ी साधना, ज्ञान – साधना और लेखन को पढ़ना और जानना संकीर्णता और कट्टरता से मुक्ति में सहायक है।"[10]

संदर्भ ग्रंथ

1. Dara Shukoh: The Man who would Be King] Harper Collins 2019] Avik Chanda-
2. तार सप्तक , पृष्ठ संख्या 198, 2011, भारतीय ज्ञानपीठ, रामविलास शर्मा
3. Dara Shikouh and his model of Inter Religious Understanding : An Assessment] Innovare Journal of social sciences] Prof G-N Khaki-
4. अमीर खुसरो का हिन्दवी काव्य , सीमांत प्रकाशन 1995, पृष्ठ संख्या 34, गोपीचंद नारंग
5. गीता और कुरआन, पटना 1996, पृष्ठ संख्या 85,सुंदरलाल
6. रहीम और रामायण, सं. हरीश त्रिवेदी, पृष्ठ संख्या 59

7. भारतीय संस्कृति मुग़ल विरासत: औरंगज़ेब के फ़रमान, पृष्ठ संख्या 58, बी.एन.पाण्डेय
8. दारा शिकोह, गंगाप्रसाद एंड संस,1953, पृष्ठ संख्या 66
9. मुग़ल बादशाहों की हिंदी कविता, राजकमल प्रकाशन, 2016, मैनेजर पाण्डेय
10. दारा शुकोह: संगम–संस्कृति का साधक ,राजकमल 2024, पृष्ठ संख्या 15.